शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2014

सम्पादकीय

गोरक्षा सत्याग्रह के बत्तीस वर्ष

डॉ.पुष्पेन्द्र दुबे

भारत में गोरक्षण और गोसेवा की सुदीर्घ परंपरा रही है। यहां के प्राचीन धर्मग्रंथों में गोवंश की जितनी महिमा गायी गयी है, उसे मनुष्य की करुणा का विस्तार कहा जा सकता है। भारत की समन्वयकारी संस्कृति को पहचानकर ही मुस्लिम शासकों ने देश में गोवंश हत्याबंदी के आदेश जारी किए, जिसके अनेक प्रमाण ऐतिहासिक ग्रंथों में दर्ज हैं। मनुष्य में अहिंसा के विचार की प्रतिष्ठापना में गोवंश का योगदान अतुलनीय है। जब यहां के ऋषि को इस बात का भान भी नहीं था कि विश्व कितना है, तब उसके मुंह से उद्‌गार निकले 'गावो विश्वस्य मातरः' अर्थात गाय विश्व की माता है। इस मंत्र के आधार से भारतीय ग्रामीण संस्कृति अपना जीवनरस पाती रही है। किसी एक देश में विविध नस्लों का गोवंश आवश्यकता के अनुरूप वहीं विकसित हो सकता है, जहां वैज्ञानिक दृष्टि संपन्न ऋषि-मुनि और गोवंश सेवक हों। लेकिन हमें यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि हमने उनके द्‌वारा विकसित गोविज्ञान की पूरी तरह उपेक्षा की है। कृषि को तथाकथित यंत्रीकरण और वैज्ञानिक कृषि के बेतुके नारे ने हमारी खेती से बैल को पूरी तरह बाहर कर दिया है। एक तरह से हमने अपने जीवनाधार को समाप्त करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है। दुनिया की जिह्वा के स्वाद को साधने और डॉलर की माला पहनने में हमने यह तक ख्याल नहीं रखा कि हम जिस शाखा पर बैठे हैं उसे ही काटने में लगे हुए हैं। गोवंश रक्षा का प्रश्न स्वराज्य से भी कठिन है यह वाक्य सच जान पड़ता है। अंग्रेजों की गुलामी में भारत में गोवंश हत्या प्रारंभ हुई, वह आजाद भारत में भी जारी है। गोवंश रक्षा के लिए न जाने कितने ज्ञात-अज्ञात गोसेवकों ने अपनी प्राणों की आहुति दे दी, परंतु यह प्रश्न आज भी अपना उत्तर तलाश रहा है। संत विनोबा ने भूदान आंदोलन के सौम्य सत्याग्रह के बाद देश में संपूर्ण गोवंश हत्याबंदी के लिए 11 जनवरी 1982 से मुम्बई स्थित एशिया के प्रथम और दुनिया के दूसरे सबसे बड़े कत्लखाने के सामने 12 साथियों को सत्याग्रह करने आदेश दिया था। 'मियां' की उपाधि से विभूषित श्री अच्युत देशपांडे 'काका' को सत्याग्रह का संयोजक बनाया गया। इस सत्याग्रह को चलते हुए 32 साल हो गए। इस बीच में देश में अनेक सरकारें आयीं और गयीं। संत विनोबा ने इस देश की संसद के सामने कोई बहुत बड़ी मांग नहीं रखी। उनका यही कहना था कि देश में कानून से संपूर्ण गोवंश हत्या बंद होना चाहिए और मांस निर्यात बंद हो, क्योंकि यह भारतीय संस्कृति का आदेश है, यह संविधान का निर्देश है, उसके लिए भारत सरकार वचनबद्ध है और भारतीय संसद का संकल्प है। हमारी खेती का आधार बैल है। इसका कत्ल अबाध गति से जारी है। आज पूरा देश महंगाई से त्रस्त है। उसका बहुत बड़ा कारण खेती का यंत्रीकरण है, जिसमें लागत दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। महंगाई पर नियंत्रण के जितने

भी उपाय किए जा रहे हैं, वेसब बेमानी हो रहे हैं। यह दुर्भाग्य ही है कि इस देश की सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आजादी को कायम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले गोवंश की रक्षा के लिए विगत 32 वर्षों से सत्याग्रह चल रहा है। अभी तक इस सत्याग्रह में तीन लाख लोग भागीदारी कर चुके हैं। इस सत्याग्रह की तीन कसौटियां हैं 1 यह सत्याग्रह असांप्रदायिक है, 2 यह सत्याग्रह अराजनीतिक है और 3 यह सत्याग्रह अहिंसक है। अच्युत काका ने सत्याग्रह को एसिड टेस्ट कहा। सत्याग्रही प्रतिदिन देवनार कत्लखाने के सामने सत्याग्रह करते हैं। जब बैलों से लदा कोई ट्रक आता है तो उसे रोकते हैं। ट्रक चालक समीप के पुलिस थाने में जाता है। पुलिस के आने पर सत्याग्रही प्रार्थना करते हैं। पुलिस सत्याग्रही को पकड़कर ले जाती है। बैलों से लदा ट्रक कतलखाने के भीतर चला जाता है। इस कत्लखाने पर लगभग आठ-नौ सौ बैल प्रतिदिन कतल होने के लिए आते हैं। यद्यपि कानून है कि खेती के लिए अनुपयोगी बैल का ही कतल किया जाए। कतलखाने के भीतर बैठे डॉक्टर बैल के अनुपयोगी होने का प्रमाण पत्र देते हैं। गोवंश हत्या का संबंध किसी धर्म विशेष से नहीं है, बल्कि यह विशुद्ध रूप से आर्थिक प्रश्न है। इस देश की कृषि प्रधान संस्कृति के रक्षण और मनुष्यता के पोषण के लिए केंद्र सरकार अविलंब संपूर्ण गोवंश हत्याबंदी कानून बनाए और मांस निर्यात को तत्काल बंद करे।